International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देश के विकास में आधुनिक शिक्षा की भूमिका

डॉ० चन्दा कुमारी
प्रोफेसर कॉलोनी, अल्लपट्टी, दरभंगा

सार:

शिक्षा राष्ट्रीय विकास का सर्वश्रेष्ठ साधन है, क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन लाने का सर्वोत्तम साधन है और सामाजिक परिवर्तन समाज को उत्थान के पथ पर अग्रसर करता है तथा सामाजिक उत्थान को जन्म देता है। शिक्षा के द्वारा ही तकनीकी क्षेत्र में क्रान्ति लाई जाती है और तकनीकी क्रांति का प्रमुख प्रभाव देश की उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान से सकल राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ता है। शिक्षा द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि के नए-नए मार्ग सुलभ होते हैं। ग्रामीण कृषि ज्ञान का उपयोग कर अपने उत्पादन को बढ़ाते हैं। शिक्षा द्वारा नियोजित एवं उद्देश्यनिष्ठ विकास संभव है। शिक्षा श्रमिकों की कार्य-कुशलता में वृद्धि कर मानवीय साधनों को बढ़ाती है।

शिक्षा प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग कर आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा व्यक्ति में सोचने-समझने तथा तर्क देने, तुलना तथा विभेद करने एवं विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करती है और इन राब क्षमताओं का प्रभाव व्यक्ति के रहन-सहन, कार्य करने के ढंग तथा उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था के दोषों को दूर कर उसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। शिक्षा हमारे दृष्टिकोण और चिन्तन को नई दिशा प्रदान करती है। इससे पूंजी निर्माण के सम्बन्ध में हमारी धारणाएँ बदलती है। कोई भी देश जो अपनी आर्थिक उन्नति को निरन्तर सुरक्षित बनाना चाहता है, उसे अपनी शिक्षा प्रणाली पर काफी ध्यान देना आवश्यक है। ये शिक्षा के विनियोगी पक्ष पर बल देते है जिससे भविष्य के लिये देश के मानवीय साधनों की उत्पादन क्षमता को उन्नत किया जा सकता है।[1]

आज के त्वरित आर्थिक विकास का मूलाधार तकनीकी प्रगति है। उसका लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक है कि अधिकांश कार्यकर्ता न केवल अपने विशिष्ट क्षेत्र में ही भलीभाँति प्रशिक्षित हों वरन् सामान्य शिक्षा एवं प्रयुक्त विज्ञानों की अच्छी पृष्ठभूमि भी रखते हों। जाहिर है कि शिक्षा के द्वारा केवल आर्थिक विकास ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संभव नहीं है, बल्कि राष्ट्र का नैतिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक और यहाँ तक की धार्मिक विकास भी संभव है किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। मानव द्वारा उपलब्ध संसाधन का उपयोग कर विकास के मार्ग को प्रशस्त किया जाता है। संसाधन का उपयोग किस तरह किया जाना है और कौन सा संसाधन किस कार्य के लिए उपयोगी है इसका ज्ञान शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है शिक्षा का प्रयोग व्यापक सन्दर्भ में किया जाता है। शिक्षा एक प्रक्रिया प्रणाली, अध्ययन विषय तथा प्राप्त अनुभव और ज्ञान भी है।

यहाँ शिक्षा से आशय विद्यालयों से प्राप्त अनुभव तथा सीखे गये ज्ञान से है। मनुष्य जीवन से लेकर मृत्यु तक जो भी किसी रूप में सीखता है अर्थात् नवीन ज्ञान प्राप्त करता है। वह शिक्षा के अन्तर्गत आता है। शिक्षा रचनात्मक गतिशील तथा जीवन्त प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा निःस्वार्थ प्रेम, हृदय की शुद्धता, श्रेष्ठ के प्रति आदर, सत्य के प्रति निष्ठा, अहिंसा, अपरिग्रह, स्वतंत्र चिन्तन, स्पष्ट अभिव्यक्ति, संवेदनशीलता, निर्भीक वृत्ति, न्याय निष्ठा, प्रकृति के प्रति सामंजस्य, स्वावलंबन तथा स्वाभिमान आदि गुणों का विकास होता है। शिक्षा संकटमय परिस्थितियों म सफलता प्राप्त करने की क्षमता बढ़ाती है तथा जीवनव्यापी दृष्टि प्रदान करती है।' शिक्षा समाज का रखरूप बदलकर उस पर नियंत्रण भी करती है अभिप्राय यह है कि व्यक्ति का दृष्टिकोण एवं उसके क्रियाकलाप समाज को गतिशील रखते हैं। शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर, उसके क्रियाकलापों में परिवर्तन कर समूह मन का निर्माण करती है और अव्यवस्था दूर कर उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती है। समाज की रचना मनुष्य ने की है, और समाज का आधार मानव क्रिया है। ये- अन्तः क्रिया सदैव चलती रहती है और शिक्षा की क्रियाके अन्तर्गत होती है। इसीलिये शिक्षा व्यवस्था जहां समाज से प्रभावित होती है वहीं समाज को परिवर्तित भी करती है। जैसे कि स्वतंत्रता के पश्चात् सबके लिये शिक्षा एवं समानता के लिये शिक्षा हमारे मुख्य लक्ष्य रहे हैं। इससे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ और समाज का पुराना ढांचा परिवर्तित होने लगा। आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्य अधिक लोकप्रिय हुआ। सादा जीवन उच्च विचार से अब हर वर्ग अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीना चाहता है। शिक्षा ने जातिगत व लैंगिक असमानता को काफी हद तक दूर करने का प्रयास

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किया। और ग्रामीण समाज अब शहरी समाजों में बदलने लगे और सामूहिक परिवारों का चलन कम हो रहा है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन और इसके द्वारा शिक्षा पर प्रभाव दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर स्पष्ट है। शिक्षा सामाजिक विकास ए.। परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसके कारण लोगों के आपसी व्यवहार एवं ज्ञान में परिवर्तन होता है। शिक्षा व्यक्ति को समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है तथा व्यक्ति को बदलते हुए जीवन के साथ हर क्षेत्र में जागरूक रखती है। अतः जिस प्रकार कृषि को अच्छा बनाने के लिए निरन्तर पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार समाज को समयानुसार बदलने एवं मजबूत बनाने केशिक्षा जरूरी है। फलस्वरूप शिक्षा, व्यक्ति और समाज, दोनों के गुणात्मक विकास की अनिवार्य शर्त है। भाषाऔर गणना के कौशल से शुरूआत कर शिक्षा सूचनाओं के संग्रह उनके विश्लेषण व निष्कर्ष निकालने, विचारों और भावनाओं के सम्प्रेषण आदि की क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा अर्जन से ही मानव अपनी शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक क्षमताओं का श्रेष्ठतम उपयोग करना सीखता है। एक परम्परागत समाज में आधुनिकीकरण के द्वार शिक्षा के माध्यम से ही खोले जाते हैं। विद्यालय शिक्षा से विद्यार्थी अपने अधिकार एवं दायित्व के प्रति सजग होते हैं। विद्यालय शिक्षा न केवल उन्हें ज्ञान देती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के आधार को भी दृढ़ बनाती है। विद्यालय शिक्षा अर्जित करने के पश्चात् विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा अर्जित करने की इच्छा भी जागृत हो जाती है। उसके पश्चात् वे परम्परागत व्यवसाय की अपेक्षा शिक्षा, चिकित्सा, बीमा बैंकिंग एवं परिवहन क्षेत्रों में कार्य करने लगते हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि होती है तथा जीवन स्तर में भी सुधार होता है। जिसके कारण वस्तुओं की माँग व उत्पादन बढ़ता है। परिणामस्वरूप देश के निर्यात में वृद्धि होने से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और देश का द्रुत आर्थिक विकास सम्भव होता है।[2]

शिक्षा किसी राष्ट्र के नव निर्माण एवं उसकी संस्कृति की वाहक होती है। शिक्षा क गौरवशाली अतीत पर ही उसके वर्तमान की दिशा निर्धारित होती है। शिक्षा संस्कार पैदा करती है जो राष्ट्र के लिए ऊर्जा का कार्य करता है। संस्कारों के निर्माण में माता-पिता एवं समाज के साथ-साथ महत्वपूर्ण कसी के रूप में शिक्षक का स्थान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निर्धारित किया गया है। शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया ए। सामाजिक व्यवस्था का आधारभूत स्तम्भ है। शिक्षक एवं शिक्षा पनिट रूप से अन्तर्सम्बनित है। सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया जिसका उद्देश्य मानव निर्माण एवं राष्ट्र की प्रगति करना है, का सोत शिक्षक ही माना जाता है। शिक्षा न केवल पथ-प्रदर्शक, ज्ञानकाक एवं प्रगति की घोतक होती है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय गरिमा को संरक्षित एवं संगति करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिकरण किया जाता है जिससे वह समाज का सभ्य, सुसंस्कृत, सृजनशील एवं रामायोजनशील प्राणी के रूप में विकसित होता है

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार, उराकी कार्यप्रणाली एवं जीवनवृत्त में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक आयोजनों की सार्थकता वहीं तक है जिरा सीमा तक वह मानवीय एवं सामाजिक आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की अभिपूर्ति कर सके। वर्तगान वैश्विक परिवर्तन के दौर में व्यक्ति के आंकाक्षा स्तर में अत्यधिक वृद्धि हो गयी है तथा इनकी पूर्ति न होने पर वह कुण्ठा एवं भग्नाशा से ग्रस्त हो जाता है। व्यक्ति अपनी इच्छाओं की सन्तुष्टि किसी भी परिस्थिति में करना चाहता है। इसलिए शिक्षा के उत्तरदायित्व एवं भूमिका में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। आज विकास की तीव्र दौड़ में वही शिक्षा व्यवस्था उपयोगी एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज को गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है।[3]

शिक्षा ही वह सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शिक्षा मानव व्यक्तित्व के निर्माण में विनियोजन, तथा व्यक्ति के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के निर्माण एवं विकास की आधारशिला है। सर्वमान्य सत्य है कि ज्ञान-विज्ञान तथा वैश्वीकरण के इस दौर में एक शक्तिशाली एवं सर्वांग विकसित राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक निर्णायक भूमिका शिक्षा जगत की ही है।[4]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आज शिक्षा केवल शुन्द ज्ञानार्जन के लिए न होकर देश के आर्थिक विकास के लिए मानी जाती है। शिक्षा द्वारा मानव की क्षमता का विकास होता है और सक्षम कुशल गानव देश का, समाज का व आर्थिक जगत का विकास करता है। जैसे धन एक पूंजी है, साधन है, उसी प्रकर मानव भी आज एक पूंजी है, साधन है, संसाधन है। उसे शिक्षा देकर ही मानव संसाधन का विकास किया जाता है।" आधुनिक युग प्रगति का युग है। संसार के सभी विकसित तथा विकासशील देशों ने प्रगति इसलिए प्राप्त की है कि उन्होंने अपने मानवीय संसाधनों का विकास किया है। कोई भी देश विकासशील पथ पर अग्रसारित तभी हो सकता है, जब वह मानवीय संसाधन विकास पर बल दे। आधुनिकीकरण के इस युग में बदलते वातावरण में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न संगठनों का विकासशील होना आवश्यक है। ऐसा तभी हो सकता है जब मानवीय योग्यताओं, क्षमताओं और प्रयत्नों का शिक्षा के माध्यम से विकास किया जाए।

भौतिक संसाधनों तथा मानवीय संसाधनों के विकास में अन्तर है। जहाँ तक भौतिक संसाधन का सम्बन्ध है, वह कृषि तथा औद्योगीकरण के विकास से संबंधित है। परन्तु मानवीय संसाधन विकास के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। कोठारी शिक्षा आयोग ने इस संबंध में स्पष्ट किया है कि "शिक्षा मानवीय संसाधनों का विकास है जो दोनों में अधिक महत्त्वपूर्ण है। जहाँ भौतिक साधनों का विकास ध्येय प्राप्ति का साधन है, वहाँ मानवीय साधन स्वयं में एक ध्येय है और उसके बिना, यहाँ तक कि भौतिक साधन का समुचित विकास संभव नहीं है।" [5]

जहाँ तक मानवीय संसाधन विकास का प्रश्न है तो आज के युग में मानवीय संसा विकास का महत्त्व जीवन के सभी क्षेत्रों में है और यह विचारधारा दिन-प्रतिदिन अत्यधिक लोकप्रिय होती जा रही है। इसका सबसे अधिक सम्बन्ध मानव जीवन के आर्थिक क्षेत्र से है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो मानवीय संसाधन ही राष्ट्र की वास्तविक पूँजी है। भौतिक संसाधन तथा मानवीय संसाधन राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी है। परन्तु इन दोनों में से मानवीय संसाधनों का अधिक महत्व है क्योंकि भौतिक साधनों का अधिकतम तथा सही-विकास मानवीय संसाधनों से ही किया जा सकता है। मानवीय संसाधनों का पर्याप्त रूप से होना ही किसी राष्ट्र की प्रगति का सूचक नहीं है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बल्कि इन संसाधनों का सही ढंग से विकास होना[5] भी आवश्यक है। मानवीय संसाधनों का विकास कराने के लिये शिक्षा एक सशक्त तथा महत्त्वपूर्ण साधन है। शिक्षा ही व्यक्ति का सन्तुलित विकास करके उसे समाज उपयोगी एवं राष्ट्र उपयोगी नागरिक बना सकती है। इस संबंध में कोठारी आयोग का मत है कि मानवीय संसाधन विकास की विकासशील देशों को अत्यन्त आवश्यकता है।[6] शिक्षा ही एकमात्र ऐसा अचूक तथा सशक्त साधन है जो विकासशील देशों को विकसित देशों में परिवर्तित कर सकता शिक्षा समाज के आदर्शों तथा क्रियाओं का विवेचन करती है। वह आवश्यक तथा अनावश्यक आदर्शों में अन्तर करती है। वह अनुपायोगी, असामाजिक तथा रूढ़िगत विचारों, परम्पराओं तथा आदर्शों से समाज की रक्षा करती है। वह समाज के समक्ष नये विचार, भाव तथा आदर्श उपस्थित करती है, जिससे समाज अपने आपको नई परिस्थितियों के अनुकूल बना सके। इस प्रकार शिक्षा समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है। उससे बालकों में नवीन विचार, भाव तथा आदर्श उत्पन्न होते हैं। शिक्षालय द्वारा परिपुष्ट होकर वे भी नवीन समाज के निर्माण कार्य में योगदान देते हैं।' [7]

शिक्षा की सशक्त संरचना के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में नवजागरण आता है जो परिवर्तन एवं गतिशीलता का सूचक होता है क्योंकि यदि समाज में किसी कारणवश परिवर्तन की दशा उत्पन्न । हो या उसकी प्रभावशीलता कम हो तो समाज की गतिहीनता भी समाप्त होने लगती है। ऐसी स्थिति में या तो सामाजिक व्यवस्था ही समाप्त हो जाती है अथवा उसमें अराजकता जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है समाज शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है तो ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र पर अपना व्यापक प्रभाव डालती है, चाहे आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र शिक्षा का नया प्रारूप समाज के स्वरूप को बदल देती है क्योंकि शिक्षा ही समाज में परिवर्तन का साधन है। समाज प्राचीनकाल से आज तक निरन्तर विकसित एवं परिवर्तित होता चला आ रहा है क्योंकि जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता गया इसने समाज में व्यक्तियों के प्रस्थिति, दृष्टिकोण, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाजों पर असर डाला और इससे सम्पूर्ण समाज का स्वरूप बदलता है।[8] शिक्षा व सामाजिक सुधार एवं प्रगति-शिक्षा समाज के व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में व्याप्त समस्याओं,कुरीतियों गलत परम्पराओं के प्रति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सचेत होकर उसकी आलोचना करते हैं और धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन होता जाता है। शिक्षा समाज के प्रति लोगों को जागरूक बनाते हुये उसमें का आधार बनाती है। जैसे शिक्षा पूर्व में वर्ग विशेष का अधिकार थी जिससे कि समाज का रूप व स्तर अलग तरीके का या अत्यधिक धार्मिक कट्टरता, रूढिवादिता एवं भेदभाव या कालान्तर में शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिये अनिवार्य बनी जिससे कि स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक प्रगति एवं सुधार स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। समाज में समानता कायम हुई। आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्य अधिक लोकप्रिय हुआ। सादा जीवन उच्च विचार से अब हर वर्ग अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीना चाहता है। आधुनिक शिक्षा ने जातिगत व लैंगिक असमानता को काफी हद तक दूर करने का प्रयास किया और ग्रामीण समाज अब शहरी समाजों में बदलने लगा ह भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का विकास सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण देश की उन्नति हेतु तैयार की गयी शिक्षा की गतिविधियों पर निर्भर करता है। मानवीय आवश्यकताएँ शिक्षा सम्बन्धी व्यवस्था के अनुसार विकसित की जानी चाहिए। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें मनुष्य ज्ञान एवं कौशल अर्जित करता है तथा अपनी अभिवृद्धि एवं योग्यता का विकास करता है। शिक्षित व्यक्ति नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक, मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी विकसित होता है[9]

शिक्षा मानवीय विकास का आधार है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्तियों की दक्षता ज्ञान, कौशल और क्षमताओं का विकास किया जा सकता है। इन्हीं के आधार पर व्यक्ति में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप बनने की शक्ति तथा लचीलापन आता है। राष्ट्रीय विकास के लिये व्यक्ति एवं भौतिक साधनों के विकास की आवश्यकता होती है। शिक्षा द्वारा ही भौतिक संसाधनों एवं मानवीय विकास का कार्य सम्पन्न किया जाता है।

भारत के आर्थिक एवं सामाजिक विकास संबंधी मामलों के विशेषज्ञ और योजना निर्माता बुनियादी शिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्य, सुविधा एवं पौष्टिक आहार, परिवार कल्याण, सस्ता आवास. पर्याप्त पेयजल, स्वच्छता, स्वस्थ परिवेश, सुरक्षित कार्य दशाएँ, युवाओं को रोजगार आदि बातों पर ध्यान केन्द्रित करें तो उनके प्रयास सफल हो सकते हैं। आजकल के वातावरण में यह आवश्यक है कि विकास सम्बन्धी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु शिक्षा को नया स्वरूप प्रदान किया जाय। शैक्षिक क्षेत्र में बुनियादी बदलाव लाने के साथ-साथ प्राथमिक स्तर से व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करके विकास से संबंधित मूलभूत लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है ताकि सामाजिक विकास में वृद्धि हो सके। उसे सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त बनाने हेतु शैक्षिक आधुनिकीकरण किये गये हैं।

1. ग्रोवर, बी0एल0, आधुनिक शिक्षा : एक नवीन मूल्यांकन, एस चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1990

2. चौबे, अखिलेश एवं चौबे, सरयू प्रसाद, भारतीय आधुनिक शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2010

3. जायसवाल, सीताराम, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं रागस्यायें, प्रकाशन केन्द्र पब्लिशर्स, लखनऊ, 2006

4. वहीं

5. मुदालियीर, ए0 लक्ष्मण स्वामी, एजूकेशन इन इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे 1995

6. लाल, रमन बिहारी तथा कान्त, कृष्ण, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2012

7. ओड, एल. के, शिक्षा के नूतन आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013

8. वर्मा, एम., द फिलासोफी ऑफ इंडियन एजूकेशन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1990

9. सक्सेना, उन.आर.स्वरूप एवं कुमार, संजय, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013